REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

# उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी मुक्ति का स्वर

डॉ. श्रद्धा हिरकने[1], श्रीमती मंजू भट्ट[2]
[1]सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), डॉ. सी.वी. रामन् विष्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.).
[2]पी–एच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), डॉ. सी.वी. रामन् विष्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.).

**सारांश : -**

यह अध्ययन उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी मुक्ति का स्वर से संबंधित है। नारी की स्वतंत्र और सशक्त छवि के निर्माण की छटपटाहट उषा प्रियंवदा का उपन्यास साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने नारी जीवन की संवेदनाओं को इस दृष्टि से चित्रित किया है, जिससे उसे अपने अस्तित्व व व्यक्तित्व को बनाए रखने में समाज से विद्रोह के स्वर दिखाई पड़े। वस्तुतः सदियो से पराधिन स्त्री की उन तमाम बेड़ियों को उषा जी तोड़ते हुए एक उन्मुक्त नारी की छवि को गढ़ती है।

उषा प्रियंवदा एक ऐसे विकसित व्यक्तित्व का परिचय देने वाली लेखिका है, जिन्हें नारी की सत्ता का समर्थन करने वाली मनो–मस्तिष्क की पर्ते खोलने वाली उपन्यासकार इसलिए इन्होने नारी जीवन की संवेदनाओं को इस दृष्टि से चित्रित किया है, जिससे उसे समाज का समर्थन व सहारा मिल सके तथा उसे स्वयं अपनी सामर्थ्य का बोध हो सके।

नारी मन के अति सूक्ष्म मनो विज्ञान का विश्लेषण इनके उपन्यास साहित्य का केन्द्र बिंदु रहा है। विरोधाभास की परिस्थितियों में इनकी नारी न तो विचलित होती है और न ही पलायन करती हैं बल्कि उन तमाम मानसिक संवेदनाओं से संघर्ष करते हुए अपनी क्षमता का परिचय देती है।

**प्रस्तावनाः**

हिन्दी उपन्यास साहित्य प्रवृत्तिगत परिवर्तनों के अनेकों पड़ावों को पार कर आज एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के सोपान पर आ पहुचा है। हिन्दी उपन्यासो में महिला लेखन एक महत्वपूर्ण पहचान बनकर उभरा है जिसमें उषा प्रियंवदा जी का नाम प्रमुख है। आज के जटिल सामाजिक परिवेश में संघर्ष में उलझी नारी की विभिन्न मन स्थितियों का अंकन उन्होंने किया है। उषा प्रियंवदा का उपन्यास या कहानी ज्यादा दार्शनिक या कलात्मकता का चक्कर नहीं लगाती सीधे–सीधे जीवन को परोस देती है।

उषा जी ने जीवन में अनेक संघर्ष किए नारी जीवन की बिडम्बनाओं को भोगा ओर नारी की मानसिक स्थितियों को अपने साहित्य के माध्यम से पाठक, समाज के सामने रखा इसलिए इनकी रचनाएँ पाठकों से सीधे संवाद स्थापित करने में समर्थ है।

उषा प्रियंवदा जी के उपन्यासों में नारी प्रधान है। नारी मन की कुंठित इच्छाओं की अभिव्यक्ति, आंतरिक टूटन–फुटन, घूटन, चिंता, द्वंद्व, निराशा, हताशा के चित्रण के साथ ही साथ सामाजिक मूल्यों में पड़ने वाली संबंधो की गहरी खाई को भी बारीकी से चिन्हित किया गया नारी के सूक्ष्म मन को टलोटना उसे खोजना मन की व्यथा की गाथा चिन्हित करना उनकी प्रमुख विशेषता है। जीवन की नवीन परिस्थितियों के साथ समझौता न

कर पाने के कारण आज स्त्री और पुरूष दोनों किस प्रकार असंबद्धता अजनबीपन एवं जीवन की विसंगतियों की अनुभव कर रहे और तनाव झेल रहे है। इसका यथार्थ चित्रण उषा जी ने अपने उपन्यास साहित्य में किया है।

इनकी रचनाओं को पढ़ना भाषा की एक समतल, शांत और कांच सी पारदर्शी सतह पर चलना है यह सतह अपनी स्वच्छता से हमें आश्वत देती है। लेकिन वह सब भाषा तक ही सीमित होती है भाषा के भीतर से जो कहानी या पात्र होते ही वह बेहद बेचैन कर देने वाली होती है। इनकी रचनाओं को पढ़ते हुए हम ऐसे पाठ से गुजरते है नारी जिसमें मनःस्थिति के अति सूक्ष्म मनोविज्ञान का विश्लेषण इनके नारी के अंदर की पीड़ा, तनाव, अबोधता, विवशता, अकेलापन आदि को देखा जा सकता है। शोध कार्य के लिए विषय चयन करने के दौरान संयोग से उषा प्रियंवदा जी की कहानियों एवं उपन्यास पढ़ने का अवसर मिला पढ़ते ही साथ हृदय का दर्द और करूणा से भर दिया तभी यह निर्णीत हुआ बाह्य दृष्टि से सहज व सादगी से भरे उषा प्रियंवदा जी अपने विचार लक्ष्य एवं रचना कर्म से हमे प्रभावित किये इन्होंने कई ऐसे नारी पात्रों को उभारा है जो अपनी क्षमताओं का परिचय अपनी संघर्षशीलता से देते हैं।

## नारी मुक्ति का स्वर –

**''रूकोगी नहीं राधिका''** उपन्यास के माध्यम से लेखिका आधुनिक मध्यवर्गीय स्वच्छंद स्त्री के अन्तर्द्वन्द को बड़ी कुशलता से व्यक्त करती है। प्रस्तुत उपन्यास स्त्री संबंधित उन तमाम भारतीय परम्परागत मान्यताओं पर प्रहार करता है जहॉ वह सदैव ही पुरूष सत्ता के अधिन होने चाहिए। भले ही वह पुरूष पिता है, पति है, भाई है, सन्तान है, उषा प्रियंवदा का उपन्यास **'रूकोगी नहीं राधिका'** इसी चिर निरंतर पुरूषवादी मानसिकता को चूर–चूर करते हुए एक स्वतंत्र स्त्री अस्मिता के गढ़ को दर्शाता है। इसी उपन्यास के माध्यम से नारी मुक्ति का स्वर सुनाई देता है।

उपन्यास की नायिका राधिका अपनी जीवन निर्णय लेने में सक्षम है तथा अपने ऊपर थोपे गये किसी भी प्रकार के निर्णय को वह अस्वीकार करती है। और एक आधुनिक शिक्षित स्त्री के रूप में सदियों से चली आ रही उन तमाम मान्यताओं को तोड़ते हुए जीवन के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण अपनाती है। पिता के आदेश को अस्वीकार करते हुए एक डैन नामक विदेशी पत्रकार के साथ एक वक्त रहते हुए भी वह उसके साथ किसी भी प्रकार के वैवाहिक बंधन में नही बंधती और न ही पिता के द्वारा बनाये गये संबंधों में बंधना चाहती है। प्रत्येक बंधन को नकारते हुए वह स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है। वस्तुतः सदियों से पराधिन स्त्री उन तमाम बेड़ियों को उषा जी तोड़ते हुए एक उन्मुक्त स्त्री, एक स्वच्छंद स्त्री की छवि को गढ़ती है।

यहाँ राधिका के माध्यम से बदलते समाज और परिस्थियों से विद्रोह के स्वर हमें सुनाई पड़ते हैं, फिर चाहे विदेश हो या स्वदेश स्त्री अपने उन्मुक्त अस्तित्व का परिचय कराती है। विवाह का बंधन इस आजाद स्त्री को स्वीकार नहीं भारत लौटने पर राधिका, मनीष और अक्षय दोनों ही पुरूष पात्रों के सम्पर्क में आती है किन्तु वह विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती। वह खुलकर मनीष को समझा देती है उदाहरण के माध्यम से..... .... ''कि तुम बार–बार विवाह की बात क्यों छेड़ देते हो, मैं अभी विवाह की मुड में नहीं हूँ।''[1] राधिका विवाह के बंधन में नहीं बंधना चाहती है और आज की स्त्री उन्मुक्त और स्वतंत्र रहना चाहती है। ये उषा प्रियंवदा की आधुनिक स्त्री है जो पुरूष के समक्ष पहली बार शर्त रखती है। राधिका कहती है कि जो मेरे सारे अवगुणों सहित मेरे अतीत को झेल ले उसमें पुरूष को अस्वीकार करने की साहस है जो सदियों से नारी को अस्वीकार करते आ रहे हैं। यही परिवर्तनवादी आधुनिक मानसिकता नारी मुक्ति का स्वर दरअसल उषा जी के उपन्यासों को एक अलग पहचान देती है, उन्हे विशिष्ट बनाती है। राधिका के समक्ष अक्षय हो या मनीष वह दोनों के साथ मित्रता का सम्बंध जरूर रखती है। लेकिन विवाह नहीं करती। पिता और भाई से भी अपना अलग स्वतंत्र जीवन चुनती है जहॉ पर पितृ सत्ता का कोई पहरा और न कोई बंधन हो। इस अर्थ में वह एक आधुनिक सोच अपनाने वाली मुक्तिगामी स्त्री का प्रतीत है। राधिका जैसे स्वच्छंद व्यक्तित्व को नया आयाम मिलता है। गौरतलब है सम्पूर्ण उपन्यास में राधिका का उन्मुक्त वातावरण देखा गया है।

विरोधाभाष की परिस्थियों में इनकी नारी न तो विचलित होती है और न ही पलायन करती है बल्कि उन स्थितियों से संघर्ष करते हुए अपनी क्षमता का परिचय देती है। उन्होनें कई ऐसे नारी पात्रों को उभारा है जो अपनी क्षमताओं का परिचय अपनी संघर्षशीलता से देती है। अने बाधाओं के बीच निरंतर मुक्ति मार्ग पर अग्रसर हो रही है। आधुनिक नारी की कथा लिखना उषा जी का लक्ष्य है। आधुनिक शिक्षा तथा सामाजिक

परिवर्तन के कारण भारतीय नारियों में नव जागरण आया और वे अपने अस्तित्व और अधिकार के प्रति सजग हुई। नारी अपने बारे में स्वतंत्र रूप से सोचने लगी, नारी को अपनी बंधन व मुक्ति का एहसास होने लगा।

## साहित्य क्षेत्र –

उषा जी के लेखन कार्य का प्रारंभ बाल्यावस्था में ही शुरू हो गया था। उन्होंने अपने परिवार में और समाज में नारी की जो स्थिति देखी उसे कहानी का विषय बनाकर पहली कहानी लिखी 'बालिका' जो विद्यालय के स्कूल पत्रिका में छपि थी। उषा जी की प्रारंभिक कहानियों में सारे दुखों और अन्यायों को सहन करती नारी का चित्रण मिलता है। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ 'जनप्रिय' पत्रिका सरिता में प्रकाशित होते रहती थी। नारी रचनाकार होने के नाते नारी मन की सूक्ष्म पकड़ इनकी रचनाओं में संभव हुई है। इनके उपन्यासों में विरोधाभास परिस्थितियों में इनकी नारी न तो विचलित होती है और न ही पलायन करती है बल्कि उन स्थितियों से संघर्ष करते हुए अपनी क्षमता का परिचय देती है। इनके उपन्यासों में नारी मुक्ति का स्वर स्पष्ट सुनाई देता है। इन्होंने कई ऐसे नारी पात्रों को उभारा है जो अपनी क्षमता का परिचय संघर्षशीलता से देते हैं। यथार्थ को लेकर चलने वाले स्वाभाविक जीवन चित्रण को आपने विशेष महत्व दिया है। लेखन के प्रति संपूर्ण निष्ठा, आत्मीयता, भावुकता, कलात्मकता सत्य की निरंतर तलाश आपकी रचनाओं की प्रमुख विशेषता रही है।

## संभावित परिणाम –

उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य में छठवें और सातवें दशक के शहरी परिवारों का संवेदनापूर्ण चित्रण मिलता है। आज वर्तमान स्थिति में शहरी जीवन में बढ़ती उदासी अकेलापन, अब आदि का अंकन करने में अत्यंत गहरे यथार्थ बोध का परिचय उषा जी ने अपने साहित्य में दिया है। नारी मन की कुंठित इच्छाओं की अभिव्यक्ति आज भी देखने को मिलती है। आंतरिक टूटन–फूटन–घूटन, चिंता, द्वन्द्व, निराशा, हताशा के चित्रण के साथ ही साथ संबंधों में पड़ने वाली दरार आज भी वर्तमान स्थिति की परिचायक है। उषा प्रियवंदा के उपन्यास साहित्य को आज की वर्तमान स्थिति से जोड़ते हुए निम्नलिखित बातों पर विचार व्यक्त किया जा सकता है जो इस प्रकार है।

- इनके उपन्यास के माध्यम से सीमित आय वाले, मध्यवर्गीय परिवार में एक पढ़ी–लिखी, नौकरी पेशा, अधिक उम्र तक अविवाहित रह जाने वाली लड़की की क्या स्थिति होती है, उसे किस प्रकार के मानसिक तनाव व संघर्षों से गुजरना पड़ा।
- इनके उपन्यास साहित्य के माध्यम से आधुनिक नारी की जटिल मानसिकता, भटकाव, पीड़ा, विद्रोह आदि को समझना।
- उषा प्रियंवदा जी के उपन्यास साहित्य में उन तमाम भारतीय परिवारों की जीवन शैली विश्लेषण को समझने का प्रयास करना।
- उषा प्रियंवदा को उपन्यासों की उपलब्धि और सीमाओं का मूल्यांकन का विश्लेषण करना। उषा प्रियंवदा के औपन्यासिक संसार के अन्तर्गत उच्चवर्ग, निम्नवर्ग, मध्य वर्ग की दशा को समझना।
- उषा प्रियंवदा जी के उपन्यासों की कथा किसी भी क्षण अविश्वसनीय नहीं लगती, जितना डूबकर उषा जी ने इसे लिखा है उतना ही डूबकर पाठक भी इसे पढ़ने का विवश होता है यह उनके उपन्यासों की बड़ी सफलता है।
- लेखिका ने बहुत ही सहज ढंग से नारी मन की चिरनिरंतर लालसाओं, कामनाओं, निराशाओं और उपेक्षाओं का अत्यंत मार्मिक कुशल और समग्र अंकन किया है।
- लेखिका के उपन्यास साहित्य में शहरी परिवारों के बड़े ही संवेदनापूर्ण चित्रण है। एक नारी होने के नाते उन्होंने नारी जीवन के कई अनछुये पहलुओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है।
- उषा प्रियंवदा का उपन्यास साहित्य नारी जीवन की त्रासद स्थितियों का ऐसे ब्यान है जिसे शायद ही किसी सबूत की जरूरत हो।
- परंपरागत, नैतिक, सामाजिक, मूल्यों में तड़पने की पीड़ा को भी लेखिका ने गहरी संवेदनशीलता के साथ व्यक्त किया है।

उषा प्रियवंदा जी ने अपने विचार लक्ष्य एवं कर्म से हमें प्रभावित किये इन्होंने कई नारी पात्रों को उभारा है जो अपनी क्षमताओं का परिचय संघर्षशीलता से देते है। इस शोध से हिन्दी उपन्यास के प्रति नवीन पाठकों का दृष्टिकोण सकारात्मक होगा तथा उनके संबंध में महिला उपन्यासकारों एवं समालोचकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा।

## निष्कर्ष –

उषा प्रियंवदा महिला कथाकारों में अग्रणी होकर अपनी आवाज बुलंद करती है। उनका नारी मुक्ति का स्वर अपने लेखन में प्रतिरोधी चेतना की मुखर अभिव्यक्ति के द्वारा नारी की स्वतंत्रता और उसके सशक्तीकरण की एक जमीन तैयार करती है। उनके चर्चित उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका' का विरोधी स्वर समाज के प्रति व नारियों के अधिकारों का हनन करता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नारी की स्वतंत्र व सशक्त छवि के निर्माण की छटपटाहट उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में दृष्टिगोचर होती है।

## संदर्भ ग्रन्थ :–


- डॉ. उषा प्रियंवदा, (2018) 'प्रतिनिधि कहानियॉ', राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली
- डॉ. उषा प्रियंवदा, (2006) हिन्दी उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका', प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली पृ. 87
- यादव डॉ. उषा, 'हिन्दी की महिला उपन्यासकारों में मानवीय संवेदना'
- राव विश्वनाथ, (2010) 'उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में आधुनिकता बोध' हैदराबाद विश्वविद्यालय
- आर्या पूनम, (2016) 'उषा प्रियंवदा के उपन्यास प्रवासी जीवन व संघर्ष के संदर्भ में'
- ढिंगरा रूचिरा, (2017) 'उषा प्रियंवदा का रचना संसार', सहचर ई–पत्रिका
- शर्मा, डॉ. प्रदीप कुमार (1990)– हिन्दी उपन्यास का शिल्प विधान, अभय प्रकाशन, कानपुर।
- डॉ. उषा प्रियंवदा (2000)– हिन्दी कहानियाँ : एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- डॉ. उषा प्रियंवदा (2004)– हिन्दी उपन्यास : अंतवर्शी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- डॉ. उषा प्रियंवदा (2006)– हिन्दी उपन्यास : पचपन खम्भे लाल दीवारे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- डॉ. उषा प्रियंवदा (2006)– हिन्दी उपन्यास : शेष यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।